शिक्षक-शिक्षार्थी के आपसी सम्बन्धों के निर्माण के लिए उपकरण के रूप में पाठ्यपुस्तकें : एक परिप्रेक्ष्य

राजराजेश्वरी टी.

सिंहावलोकन : इस लेख में कक्षा में शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में पाठ्यपुस्तकों की उपयोगिता का पता लगाने का प्रयास किया गया है। लेख यह समझने की कोशिश करता है कि क्या पाठ्यपुस्तकों का डिज़ाइन और उपयोग शिक्षक और शिक्षार्थी के आपसी सम्बन्धों को सुधारने में मदद करता है।

लोकतांत्रिक प्रणाली में स्कूल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्थूल स्तर के समाज को सूक्ष्म स्तर की प्रक्रियाओं से जोड़ने के लिए कक्षा एक लघु जगत के रूप में कार्य करती है। लेकिन अकसर यह सवाल उठता है कि क्या महज़ स्कूल जाना और कक्षा में भाग लेने से समाज बदल जाएगा? यदि ऐसा है, तो कक्षा अभ्यासों के वे कौन-से उपकरण हैं जो मुक्ति का अनुभव कराने की दिशा में सहायता करते हैं? बाल-केन्द्रित शिक्षा पर ध्यान दिए जाने से देश में पाठ्यपुस्तकों पर बहुत चर्चा होने लगी है। स्कूली शिक्षा प्रणाली के भीतर पाठ्यपुस्तकों का एक प्रमुख स्थान है ताकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अधिगम के अवसरों को डिज़ाइन कर सकें और विशेष अध्ययन की माँग कर सकें।

सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी चर्चाओं में अकसर पाठ्यचर्या उद्देश्यों के कार्यान्वयन में गुणवत्ता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के आधार पर उनकी आवश्यकता पर ज़ोर दिया जाता है। निर्धारित पाठ्यपुस्तक पर एक शिक्षक की निर्भरता शैक्षिक आदर्शों को प्राप्त करने में उनके प्रतीकात्मक कार्य और दिन-प्रतिदिन कक्षा के संचालन के व्यावहारिक उपयोग में उनकी सार्वभौमिकता को दर्शाती है। हर विषय एक पाठ्यपुस्तक के साथ निर्धारित होता है, और शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे एक शैक्षिक वर्ष में उसे पूरा करें, इसका उपयोग करके अपनी शैक्षिक योजनाएँ बनाएँ, यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी इसके भीतर निर्धारित अभ्यास पूरा करें, और इसके दायरे में विद्यार्थियों के ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षाएँ डिज़ाइन करें। राज्य, स्कूल के अधिकारी, अभिभावक और यहाँ तक कि विद्यार्थी भी यह स्वीकार नहीं करते कि पाठ्यपुस्तक से हटकर कुछ किया जाए। पाठ्यपुस्तक ऐसे अधिकार का प्रतीक है जिसे शिक्षा प्रणाली के भीतर शिक्षक नकार नहीं सकते। हमारे देश में सार्वजनिक शिक्षा के केन्द्रीकृत परीक्षा ढाँचे के भीतर विकसित पाठ्यपुस्तक का यह अधिकार, विशाल प्रणाली के भीतर शिक्षक और शिक्षार्थी की एक विशेष स्थिति बनाता है और उनके बीच एक विशेष सम्बन्ध बनाता है।

'पाठ्यपुस्तक संस्कृति' के क्षेत्र में (शिक्षक-पाठ्यपुस्तक मतभिन्नता, पाठ्यपुस्तक संस्कृति की औपनिवेशिक जड़ें, राष्ट्र निर्माण में पाठ्यपुस्तक की भूमिका और ज्ञान का निर्माण आदि पर) बहुत से शोध और विवाद होते रहे हैं। ये सभी शैक्षिक प्रक्रिया में इसकी भूमिका और लोकतंत्र के लिए 'आदर्श' नागरिकों के निर्माण में इसके महत्त्व के बारे में विवेचनात्मक और प्रासंगिक प्रश्न उठाते हैं। पाठ्यपुस्तकों को 'आधिकारिक ज्ञान' के रूप में माना जाता है और वे अकसर विकास के सामाजिक-संज्ञानात्मक चरणों में कई बच्चों के लिए ज्ञान का एकमात्र स्रोत बनी रहती हैं। पाठ्यपुस्तकों के विन्यास के भीतर और कक्षाओं में उनके उपयोग से शिक्षार्थियों को जानकारी, अवधारणाओं, अभ्यासों, दृश्य-सामग्री आदि के माध्यम से शिक्षा के बड़े लक्ष्य से परिचित कराया जाता है। दुनिया के बारे में बच्चे की संकल्पना, उसका व्यवस्थापन और कार्य आदि को पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन और कक्षा में इसके उपयोग के तरीक़ों द्वारा महत्त्वपूर्ण तरीक़ों से आकार दिया जाता है।

एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली में, जिसमें समय का

बन्धन हो और जो इसमें शामिल प्रमुख लोगों को दिन-प्रतिदिन एक विषय से दूसरे विषय पर कूदने के लिए नियमबद्ध करता हो, अनुभव का प्रश्न गौण हो जाता है। ऐसे में एक बड़ा सवाल यह सामने आता है कि क्या स्कूलों में पाठ्यपुस्तकों का वर्तमान डिज़ाइन और उपयोग, शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों के लिए समान रूप से, कक्षा के अनुभव को स्वतंत्र बनाने में सफल है। आज पाठ्यपुस्तकों को केन्द्रीय शिक्षण-अधिगम सहायक के रूप में माना जाता है तो इस बात की जाँच करने की माँग उभरती है कि वे शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध बनाते हैं।

स्कॉटलैण्ड के दार्शनिक अलासैयर मैकइंटायर (1985) कहते हैं कि कोई भी सामाजिक प्रथा जटिल, सामाजिक रूप से स्थापित और सहकारी मानवीय गतिविधि है। किसी गतिविधि का लाभ साकार करने के लिए उस गतिविधि के लिए परिभाषित और उपयुक्त मानकों में भाग लेकर उत्कृष्टता प्राप्त करनी होती है। मैकइंटायर का दावा है कि इस लाभ को प्राप्त करने के लिए उन लोगों के बीच मज़बूत सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता है जो गतिविधि में भाग लेते हैं। प्रतिभागियों को एक-दूसरे के साथ ईमानदारी से व्यवहार करना चाहिए और दृढ़ विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए। किसी भी अभ्यास की निरन्तरता के लिए ये गुण आवश्यक शर्तें हैं। मैकइंटायर की संकल्पना के अन्तर्गत हम इस बात को विश्वास के साथ मान सकते हैं कि शिक्षा एक सामाजिक अभ्यास है। उत्कृष्टता की तलाश करने के लिए शिक्षकों की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वे अधिगम के ऐसे अवसर डिज़ाइन करें जो विद्यार्थियों को संवेदना, नैतिक और बौद्धिक स्वायत्तता तथा अपने साथियों की परवाह करने की नैतिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें। अधिगम के ऐसे अवसर शिक्षकों और विद्यार्थियों को अपने जीवन के साथ सम्बन्ध बनाने, अपनी सामाजिक दुनिया का अवलोकन करने, अन्तःविषयी दृष्टिकोण रखने और अपने परिवेश के साथ सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। इस प्रकार, शिक्षक और शिक्षार्थी का आपसी सम्बन्ध किसी भी शैक्षिक अभ्यास का मूल है। क्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित पाठ्यचर्या इस तरह के रिश्तों के निर्माण और कक्षाओं में इस तरह के अनुभव पैदा करने के लिए एक समर्थक का काम करती है?

आइए, हम पाठ्यपुस्तक के विन्यास में चित्र/दृश्य निरूपण और कक्षा में इसके उपयोग का एक उदाहरण लें। चित्र या दृश्य, निरूपण की एक प्रक्रिया को प्रस्तुत करते हैं तो शब्द और वाक्य दूसरी को। ज्ञान के निर्माण और आत्मसात करने की संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ तब होती हैं जब शिक्षार्थी को निरूपण की संस्कृतियों के भीतर अनुभवात्मक प्रक्रियाओं के माध्यम से समाजीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक पढ़ते समय उसमें दिए गए शब्द और चित्र संकेत सीखने वाले की इस बात में सहायता करते हैं कि वे घटना को समझ सकें और चरित्रों के सामाजिक निरूपण (लिंग, वर्ग, जाति आदि) को त्वचा के रंग, कपड़ों के डिज़ाइन और साझा की गई घटना के विवरण आदि के द्वारा जान सकें। दृश्य संकेतों और अभ्यास के साथ प्रस्तुत जानकारी को एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में कार्य करना चाहिए। इसे शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के जीवन के साथ सम्बन्ध बनाकर ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया को विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए। इस प्रकार पाठ्यपुस्तकों में प्रदान की गई ठोस जानकारी, अवधारणाओं और अभ्यासों का अर्थ समझने का कार्य सरल प्राकृतिक प्रक्रिया नहीं है। यह जटिल संज्ञानात्मक, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं की ज़रूरत पर ज़ोर देता है। एक उपकरण के रूप में पाठ्यपुस्तक को इन दृश्य और लिखित संकेतों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने में शिक्षक की सहायता करनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों का डिज़ाइन ऐसा होना चाहिए कि उसके भीतर शैक्षणिक घटक निहित हों जो शिक्षक को अधिगम की प्रक्रिया के दौरान अनुभव के सृजन में सहायता करें। इस शैक्षणिक घटक की अनुपस्थिति में शिक्षक अकसर निर्धारित पाठ्यक्रम के एक निष्क्रिय वितरक बनकर रह जाते हैं और बच्चे ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता बन जाते हैं। कक्षा का अनुभव अकसर अध्याय को पढ़ने, साझा की गई जानकारी का सार प्रस्तुत करने और आगामी

परीक्षा के लिए अभ्यास पूरा करने तक सीमित हो जाता है। अनुभव सृजन न कर पाने की स्थिति में ये पाठ्यपुस्तकें अकसर एक उपकरण के रूप में अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में विफल रहती हैं।

एक उपकरण या सहायक सामग्री अपने अनुभव सृजन के गुण द्वारा ज्ञान और उसके गुणों सम्बन्धी मतभिन्नता और विवादों को सामने लाती है। शिक्षार्थी अपने शिक्षक पर भरोसा करके और अपने साथियों के साथ मिलकर काम करके इन मतभिन्नताओं से गुज़रते हैं। पाठ्यपुस्तक के भीतर इन प्रक्रियाओं के अन्तर्निहित न होने से एकरूप, आंशिक ज्ञान बिना किसी जाँच के बच निकलता है।

बच्चे एक से दूसरी वैज्ञानिक घटना, एक से दूसरी ऐतिहासिक घटना और एक सूत्र से दूसरे सूत्र तक चलते चले जाते हैं, बिना उन्हें आत्मसात किए, जिससे उन्हें सीखने का कोई परिणाम नहीं मिलता है और अधिगम एक निर्वैयक्तिक कार्य बनकर रह जाता है।

पाठ्यपुस्तक की इस अवधारणा से, इसके डिज़ाइन और उपयोग से, शिक्षक-शिक्षा, मूल्यांकन, जवाबदेही आदि के क्षेत्रों में किसी अन्य शैक्षिक सुधार की गुंजाइश नहीं होती। पिछले वर्षों में एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के साथ-ही-साथ निजी प्रकाशकों द्वारा डिज़ाइन की गई पाठ्यपुस्तकों के डिज़ाइन में भी बदलाव हुए हैं। पाठ अधिक अन्तर्क्रियात्मक हो गए हैं और विषयों को एकीकृत करने का प्रयास किया गया है। इसके बावजूद अधिकांश कक्षाओं में उनका उपयोग अभी भी उसी बँधे-बँधाए तरीक़े से होता है और पाठ्यपुस्तकें अभी भी विद्यार्थी-शिक्षक के सम्बन्धों पर हावी हैं। अगर हम कक्षाओं में शिक्षकों की नैतिक और बौद्धिक स्वायत्तता की कल्पना करते हैं तो शिक्षक और पाठ्यपुस्तकों को देखने के लिए एक नए तरह के रिश्ते की संकल्पना करनी होगी। अगर शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में सहायक सामग्री के रूप में पाठ्यपुस्तकों के प्रभावी उपयोग को समझना है तो उनकी शैक्षणिक सामग्री का ज्ञान सशक्त होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों की ऐसी समझ विकसित करने और अनुभवात्मक अधिगम अभ्यासों का निर्माण करने हेतु इसके उपयोग के लिए, शिक्षक-शिक्षा को शिक्षकों में समीक्षात्मक साक्षरता का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए।

References:

Kumar, Krishna. “Textbooks and Educational Culture.” *Economic and Political Weekly* (1986):1309-1311.

Kumar, Manoj. “Visual Literacy is Fundamental to Teacher Education Curriculum.” 16 April 2018. *thenewleam.com*. <http://thenewleam.com/2018/04/visual-literacy-fundamental- teacher-education-curriculum/>.

MacIntyre, Alaisdair. *After virtue: A study in moral theory*. London: Duckworth, 1985.

राजेश्वरी टी. चेन्नई में एक शिक्षिका हैं। उन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों के तहत कक्षाओं में शैक्षणिक उपकरण के रूप में समीक्षात्मक साक्षरता का उपयोग करने की दिशा में शिक्षकों और बच्चों के साथ काम किया है। सम्प्रति वे सीड अकादमी, चेन्नई में बतौर अकादमिक समन्वयक कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उनसे rajarajeshwari.t13@apu.edu.in या rajeshwarit975@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण** : प्रीति मिश्रा **कॉपी एडिटर** : ज्योति चौरड़िया